नवम्बर-दिसम्बर 2022

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगा

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 टुंडा

उड़ान

9 एक था दादा

10 काली बिल्ली

11 तितली आई / मटर

12 पक्की दोस्ती

14 चूहा और खरगोश

ज्ञान विज्ञान

15 धातु-अधातु

जोड़-तोड़

17 समबाहु त्रिभुज

कलाकारी

18 काँच पर डिजाइन

बात लै चीत ले

20 मोर नाच रहा है

अनाथ लड़की

21 माथापच्ची/हीहीही-ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

शिवानी मीना कक्षा-8, राजकीय विद्यालय खाण्डोज

सम्पादन : राजेश कुमावत

सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक

डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज

प्रूफ़ : सुरेश चंद

वितरण : लोकेश राठौर

आवरण चित्र : **आरती**, उम्र-11 वर्ष, बावरी बस्ती

वर्ष 14 अंक 149-150

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन-आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस-नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन

विष्णु गोपाल

निदेशक,

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता

मोरंगे

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर

(राजस्थान) 322001

फोन: 07462-220957

परिचय

नमिता गुर्जर, कक्षा-8, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कटार

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर-सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम-1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव-जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला की सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन-सहन, खान-पान, आजीविका, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोली-भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल

भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खौखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम - 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष-2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

रविना शर्मा, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

टुंडा

अरविन्द मीना, कक्षा-8, फेलोशिप सेंटर छारोदा

एक सच्चा गुरु वह नहीं है जो कि व्यक्ति की कमजोरी और दिव्यांगता को बार-बार इंगित करके उसे डराकर वह कार्य नहीं करने दे। बल्कि उसी कमजोरी को ढाल बनाकर उसमें आत्मविश्वास भरकर विजेता बना दे, वहीं सच्चा गुरु है। आइये पढ़ते हैं एक कहानी।

वह बड़ी ही आशा भरी नजरों से गुरु के सामने खड़ा था। गुरु अपनी पारखी नजर से उसका परीक्षण करने की कोशिश कर रहे थे। लगभग नौ-दस साल का छोकरा, बच्चा ही था। उसके बायाँ हाथ नहीं था। गाँव में बैलों की लड़ाई में टूट गया था।

"क्या चाहिए मुझसे?" गुरु ने उस बच्चे से पूछा।

उस बच्चे ने थोड़ा खांस कर गला साफ किया, हिम्मत जुटाई और कहा, "मैं आपसे कुश्ती सीखना चाहता हूँ।

एक हाथ नहीं है और कुश्ती लड़नी है, अजीब बात है, पागल हो गया क्या?

"अच्छा क्यों?"

"स्कूल में बाकी लड़के चिढ़ाते हैं मुझे और मेरी छोटी बहन को। "टुंडा" कहते हैं मुझे। हर किसी की दया भरी नजर ने मेरा जीना हराम कर दिया है, घृणा आने लगी है अपने आप पर, गुरुजी। मुझे अपनी हिम्मत और दम पर जीना है। किसी की दया दृष्टि नहीं चाहिए। मुझे खुद की और परिवार की रक्षा भी करनी आनी चाहिए।"

"अच्छी बात है परन्तु अब मैं बूढ़ा हो चुका हूँ और किसी को नहीं सिखाता, तुझे किसने भेजा मेरे पास?"

"मैं कई शिक्षकों के पास गया। कोई भी मुझे सिखाने को तैयार नहीं। एक बड़े शिक्षक ने आपका नाम सुझाया। तुझे वो ही सीखा सकते हैं क्योंकि उनके पास समय ही समय है और कोई सीखाने वाला नहीं मिलेगा तुझे, ऐसा बोले।"

वो अहंकार से भरा जवाब किसने दिया होगा ये गुरुजी समझ गये। ऐसे गुरूर वाले लोगों की वजह से ही खेल प्रवृत्ति के लोग इस खेल में आ गये ये बात गुरु अच्छे से जानते थे।

"ठीक है, कल सुबह सूर्योदय से पहले अखाड़े में पहुँच जाना और हाँ याद रखना मुझसे सीखना

आसान नहीं है ये पहले ही बोल देता हूँ। कुश्ती एक जानलेवा खेल है। इसका इस्तेमाल अपनी रक्षा के लिए ही करना। मैं जो सिखाऊँ उस पर पूरा विश्वास रखना और इस खेल का नशा भी चढ़ जाता है आदमी को। इसलिए सिर-दिमाग भी ठंडा रखना। समझा?"

"जी गुरुजी। समझ गया। आपकी हर बात का निष्ठा से पालन करूंगा। मुझे अपना शिष्य बना लीजिए।" मन की मुराद पूरी हो जाने के आँसू उस बच्चे की आँखों में झलक आये। उसने खुशी से गुरु के पाँव छूकर आशीष लिया।

एक ही बच्चे को सिखाना गुरुजी ने शुरु किया। मैदान तैयार किया, मिट्टी में हाथ मारा, मुगदुल से धूल झटकायी और इस एक हाथ के बच्चे को कैसे सीखाना है यही सोचते-सोचते गुरुजी की आंख लग गई।

एक ही दांव गुरुजी ने उसे सिखाया और रोज उसका ही अभ्यास बच्चे से करवाते रहे। छह महीने तक हर रोज बस एक ही दांव, बच्चे को समझ नहीं आ रहा था, आखिर गुरुजी ऐसा क्यों कर रहे हैं, पूछने की हिम्मत नहीं थी परन्तु एक दिन बच्चे ने गुरुजी के जन्मदिन पर पाँव दबाते हुए हौले से बात को छेड़ ही दिया।

"गुरुजी, छह महीने हो गये, इस दांव की बारीकियाँ मैं अच्छे से समझ गया हूँ और कुछ नए दांव पेंच भी सिखाइये ना।"

गुरुजी वहाँ से उठके चल दिये। बात से बच्चा परेशान हो गया कि उसने गुरु को नाराज कर दिया।

फिर भी गुरुजी के बात पर भरोसा करके बच्चा सीखते रहा। फिर उसने कभी नहीं पूछा कि और कुछ सीखना है या नहीं।

कुछ समय बाद पास के गाँव में कुश्ती की प्रतियोगिता आयोजित की गई। बड़े-बड़े इनाम रखे गए थे विजेता के लिए। हरेक अखाड़े के अच्छे चुने हुए पहलवान प्रतियोगिता में भाग लेने आए। गुरुजी ने बच्चे को बुलाया। "कल सुबह बैल जोत कर रखना गाड़ी में। पास के गांव जाना है कल सुबह कुश्ती लड़नी है तुझे।"

कुश्ती शुरु हुई, पहली दो कुश्ती के मुकाबले इस बिना हाथ के बच्चे ने चुटकियों में जीत लिये। जिस घोड़े के आखिरी आने की उम्मीद हो और वो रेस जीत जाए तो रंग उतरता ही है। वैसा सारे विरोधी उस्तादों का मुंह उतर गया। देखने वाले लोग अचरज में पड़ गए। बिना हाथ का बच्चा कुश्ती में जीत ही कैसे सकता है? किसने सिखाया है इसे?"

परन्तु अब तीसरी कुश्ती में सामने वाला खिलाडी नौसिखिया नहीं था। पुराना जांबांज खिलाड़ी परन्तु अपने साथ सुथरे हथकंडों से और दांव का सही तोड़ देने से यह कुश्ती भी बच्चा जीत गया।

इस बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ भी गया। पूरा मैदान भी उसके साथ हो गया था। मैं भी जीत सकता हूँ यह भावना उसे अंदर से मजबूत बना रही थी।

देखते ही देखते वो खेल की अंतिम बाजी तक पहुँच गया।

जिस अखाड़े वाले ने मजाब बनाकर उस बच्चे को इस बूढ़े गुरुजी के पास भेजा था, उस अहंकारी पहलवान का चेला ही इस बच्चे का आखिरी कुश्ती में प्रतिस्पर्धी था।

यह पहलवान सरीखे उम्र का होने के कारण शक्ति और अनुभव से इस बच्चे से श्रेष्ठ प्रतीत होता था। कई मैदान मार लिये थे उसने। इस बच्चे को तो वो मिनटों में चित कर देगा, यह स्पष्ट था।

पंचों ने राय-मश्वारा किया। "ये कुश्ती करवाना सही नहीं होगा। आखिर कुश्ती बराबरी वालों में होती है। ये कुश्ती का मुकाबला मानवता और समानता के अनुसार रद्द किया जाता है। पुरूस्कार दोनों में बराबरी से बांटा जायेगा।" पंचों ने अपना मंतव्य सबके सामने प्रकट किया।"

"मैं इस कल के छोकरे, टुंडे से कई ज्यादा अनुभवी हूँ और ताकतवर भी। मैं ही ये कुश्ती जीतूंगा

आकाश मीना, कक्षा-4, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

ये बात आप सभी भी जानते हैं। तो फिर इस कुश्ती का विजेता मुझे ही बनाया जाए।" वह प्रतिस्पर्धी अहंकार में बोला।

"मैं नया हूँ और बड़े भैया (प्रतिस्पर्धी) से अनुभव में छोटा भी। मेरे गुरूजी ने मुझसे ईमानदारी से खेलना भी सिखाया है। बिना खेले जीत जाना मेरे गुरूजी का अपमान ही होगा। यदि आप कुश्ती नहीं करवाते हैं तो मेरे हक का जो है उसे दे दीजिए। इस तरह की भीख मुझे नहीं चाहिए।" उस बांके जवान की स्वाभिमान भरी बात सुनकर लोगों ने तालियों की बौछार कर दी।

ऐसी बातें सुनने में तो अच्छी लगती हैं पर काफी नुकसानदेय होती हैं। इन बातों से और जनता की राय से पंच हतोत्साहित हो गये। कुछ कम ज्यादा हो गया तो? पहले ही एक हाथ खो चुका है अपना, और कुछ नुकसान ना हो जाए? मूर्ख कहीं का, सभी ने मन ही मन सोचा।

आखिरकार लड़ाई शुरु हुई।

और सभी उपस्थित लोग अचंभित ही रह गए। सफाई से किए हुए वार और मौके की तलाश में बच्चे ने फेंका हुआ दांव उस बलाढ़य प्रतिस्पर्धी को झेलते तक नहीं बना। वो मैदान के बारह औंधे मुँह पड़ा था। कम से कम परिश्रम में उस नैसिखिए प्रतिभागी ने उस पुराने महारथी तक को धूल चटा दी।

मैदान (अखाड़े) में पहुँच कर बच्चे ने अपना मैडल निकाल के गुरूजी के चरणों में रख दिया। अपना

और अपना सिर गुरूजी के चरणों की धूल माथे लगा कर गुरूजी को प्रणाम किया।

"गुरूजी, एक बात पूछना चाहता हूँ।

"पूंछ, क्या पूछना चाहता है?"

'मुझसे सिर्फ एक ही दांव आता था, फिर भी मैं कैसे जीत गया?"

"तू दो दांव सीख चुका था बच्चे, इसलिए जीता।"

"कौनसे दो दांव गुरूजी।"

पहली बात, तू ये दांव इतनी अच्छी तरह से सीख चुका था और उसमें गलती होने तक की गुंजाइश ही नहीं थी। मुझे नींद में भी लड़ता तब भी तू इस दांव में गलती नहीं करता। तुझे दांव आता है ये बात तेरा प्रतिद्वंदी अच्छी तरह से जान चुका था, पर मुझे सिर्फ यही दांव आता है ये बात थोड़ी उसे मालूम थी?"

मनीषा मीना, कक्षा-9, उमंग सेंटर रांवल

"अच्छा और दूसरी बात क्या थी गुरूजी?"

"दूसरी ज्यादा महत्व रखती है। हर एक दांव का एक प्रतिदा होता है, ऐसा कोई दाव नहीं है जिसका तोड़ ना हो। वैसे ही इस दांव का भी एक तो़ था।"

"तो क्या मेरे प्रतिस्पर्धी को वो दांव मालूम नहीं होगा, ऐसा?"

"वो उसे मालूम था। पर वो कुछ नहीं कर सकता था। जानते हो क्यों? क्योंकि उस तोड़ में दांव देने वाले का बांया हाथ पकड़ना पड़ता है, जो तुम्हारे पास नहीं है।"

अब आपके समझ में आया होगा कि एक बिना हाथ का साधारण लड़का विजेता कैसे बना?

जिस बात को हम अपनी कमजोरी समझते हैं, उसी को जो हमारी शक्ति बना कर जीना सिखाता है, विजयी बनाताहै वो ही सच्चे अर्थों में "सच्चा गुरूजी" है।

हर कोई जिंदगी के हर एक दांव में पारंगत नहीं होता, हर कोई कहीं ना कहीं कमजोर जरूर होते हैं, दिव्यांग होते हैं। उस कमजोरी को मात देकर जिंदगी जीने की कला सिखा दे वही सच्चा गुरु है।

महेश यादव (इन्टरनेट से साभार)

उड़ान

एक था दादा

रामवीर गुर्जर, कक्षा-4, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फरिया

एक था दादा
खाता था कांदा
कांदा था गोल
दादा ने पढ़ी भूगोल
भूगोल थी अच्छी
दादा की उम्र कच्ची
दादी थी बहुत सच्ची
खाती थी मच्छी
मच्छी थी सूंदर
दादा के घर में घुसे बंदर
बंदर थे लाल
करते थे धमाल
दादी ने उसको पाला
दादा बन गया काला।

रामवीर गुर्जर, कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

रामवीर गुर्जर, कक्षा-4, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फरिया

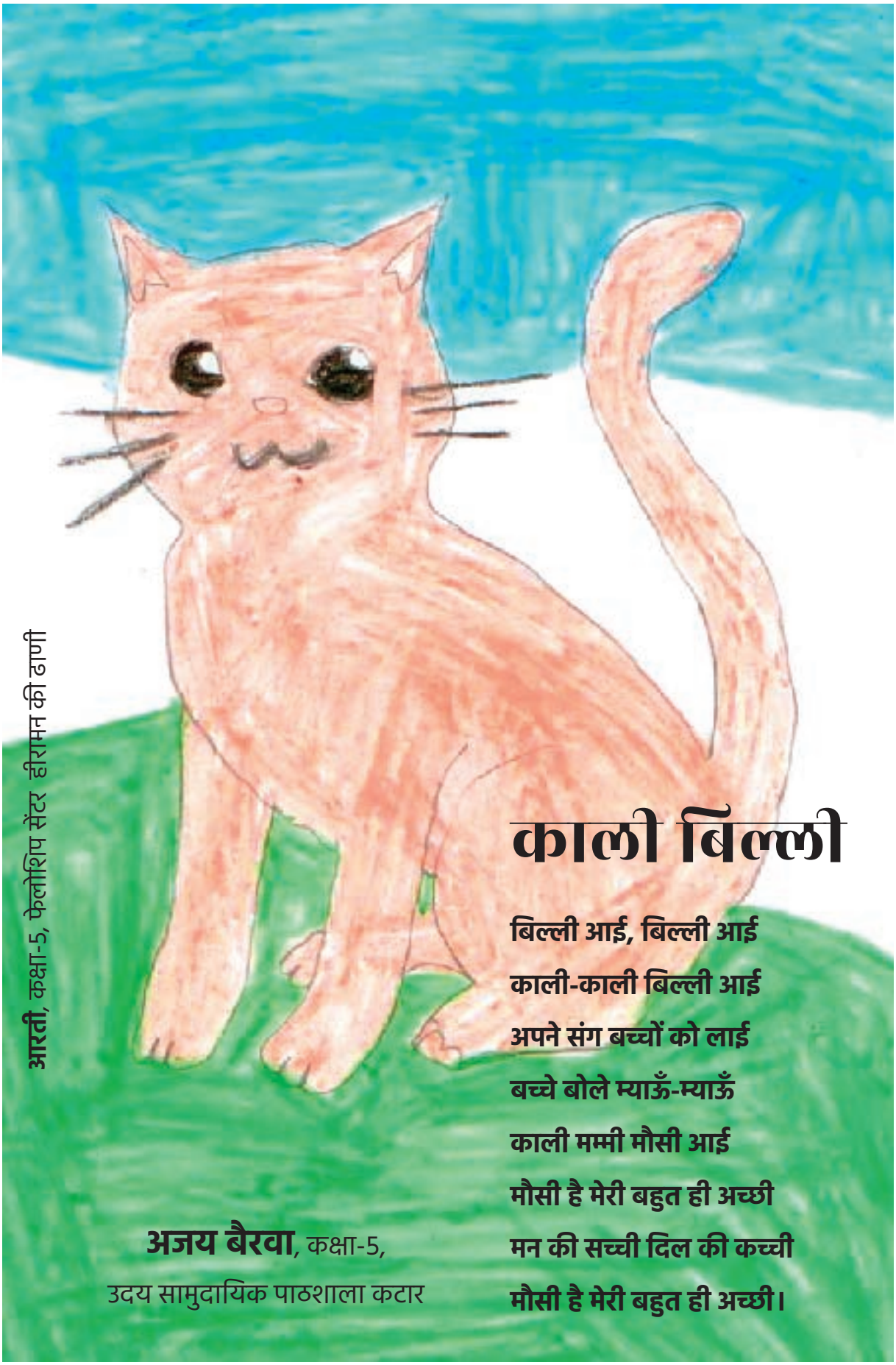

आरती, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर हीरामन की ढाणी

काली बिल्ली

बिल्ली आई, बिल्ली आई
काली-काली बिल्ली आई
अपने संग बच्चों को लाई
बच्चे बोले म्याऊँ-म्याऊँ
काली मम्मी मौसी आई
मौसी है मेरी बहुत ही अच्छी
मन की सच्ची दिल की कच्ची
मौसी है मेरी बहुत ही अच्छी।

अजय बैरवा, कक्षा-5,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

तितली आई

तितली आई तितली आई
फूलों पर मंडराती आई
फूलों का रस चूसती
तितली आई तितली आई
रंग बिरंगी तितली आई
काली तितली पीली तितली
सबके मन को भाती तितली
उड़ती उड़ती तितली आई
तितली आई तितली आई।

गोलमा गुर्जर
कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मटर

लाल-लाल है टमाटर
हरी हरी होती है मटर
बच्चे खाते हैं बटर-बटर
हरी-पीली-नीली होती है कटर
पेंसिल छिलती है उससे सटर-सटर
कटर को ले गये चटर मटर।

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा-7,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

सपना बैरवा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

पक्की दोस्ती

दिलबर मीना, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

बहुत पहले की बात है। एक जंगल में कई तरह के जानवर रहते थे। एक बार एक हिरण को बहुत तेज प्यास लगी परन्तु उसे जंगल में ढूंढने पर भी पानी नहीं मिला। क्योंकि उस जंगल में कई वर्षों से पानी नहीं आया था। हिरण पानी तलाशते-तलाशते थक गया और एक पेड़ के नीचे लेट गया। तभी वहां से खरगोश गुजरा और हिरण को परेशन देखकर हिरण से बोला हिरण भैया तुम ऐसे उदास होकर क्यों पड़े हो। हिरण बोला, भाई मुझे बहुत तेज प्यास लग रही है पर मुझे पूरे जंगल में खोजने पर भी पानी नहीं मिला। खरगोश ने कहा, कि मैं तुम्हें पानी पिला सकता हूँ परन्तु तुम्हें मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी। हिरण बोला तो बताओ तुम्हारी क्या शर्त है। खरगोश बोला, कि पानी का तालाब शेर की गुफा के पास है। आपको पानी पीने जाते समय आवाज नहीं करनी है और चुपचाप से पानी पीकर आ जाना है। अगर तुमने आवाज की तो हम दोनों शेर के हाथों से मारे जायेंगे। ठीक है, मैं पानी पीने जाऊंगा और बिल्कुल भी आवाज नहीं करूंगा। अच्छा चलो भी दोनों पानी पीने शेर की गुफा के पास तालाब में चले गये। पानी पीते समय हिरण का पैर फिसल गया। वह पानी में गिरा और चिल्लाने लगा। मुझे कोई बचाओ, यहां से बाहर निकालो। शेर ने हिरण की आवाज सुनी और वह उठ गया और हिरण को जा पकड़ लिया। शेर उसे मारने ही वाला था कि हिरण ने कहा, तुम मुझे मत मारो, मैं बहुत प्यासा हूँ, मुझे पहले पानी पी लेने दो फिर आप मुझे अपना भोजन बना लेना। हिरण को मुसीबत में देखकर खरगोश ने दिमाग लगाया। उसने फौरन झाड़ियों के पीछे जाकर एक पत्ते की पुपाड़ी बनाई और शेर

की आवाज निकाली। दहाड़ने की आवाज सुनकर शेर ने सोचा कि इस जंगल में मेरे अलावा और कोई शेर नहीं है और मैं आने भी नहीं दूगा तो फिर वह कौन है? जाकर देखना होगा। शेर उसे देखने के लिए गया और हिरण मौका पाकर तुरंत नो दो ग्यारह हो गया। हिरण को शेर के चंगुल से निकालकर खरगोश भी वहां से चला गया। शेर ने देखा तो झाड़ियों के पीछे कोई नहीं था। हिरण और खरगोश अब पक्के दोस्त बन गए और खुशी-खुशी एक साथ रहने लगे।

एक बार खरगोश घूमता-घूमता जा रहा था तभी वह एक शिकारी की जाल में फंस गया और चिल्लाने लगा कि कोई मुझे बचाओ। हिरण ने यह आवाज सुनी वह समझ गया कि यह मेरे मित्र खरगोश की आवाज है। हो न हो वह अभी किसी मुसीबत में है। हिरण तुरंत अपने मित्र की तलाश में मदद के लिए निकल पड़ा। झाड़ के पास जाकर खरगोश से कहा, अरे मित्र तुम इस जाल में कैसे फंस गए। खरगोश बोला, पहले मुझे बाहर निकालो, हिरण ने कहा, कि मित्र तुम बिल्कुल भी नहीं घबराना। मैं तुरंत तुम्हारी सहायता के लिए चूहे को बुला कर लाता हूँ। हिरण की विनती सुनकर चूहा खरगोश की मदद के लिए फौरन चल दिया। चूहे ने झट से अपने नुकीले दांतों से जाल को कुतर दिया और खरगोश को जाल से बाहर निकाल लिया। हिरण ने अपने मित्र खरगोश से पूछा कि आप इस जाल में कैसे फंस गये? खरगश ने बड़े ही मासूमियत से कहा, कि तुम्हारी तरफ आ रहा था कि मेरा पैर इस जाल में फंस गया और मैं भी धीरे-धीरे इसमें फंसता चला गया। चलो अब मैं तुम्हारे ही साथ रहूंगा। दोनों मित्रों ने चूहो को धन्यवाद कहा और दोनों वहाँ से चले गए। हिरण और खरगोश दोनों साथ-साथ खुशी से भाइयों की तरह रहने लगे।

गोविन्द नायक, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

प्रिया गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

चूहा और खरगोश

सोनम मीना, कक्षा-3, फ़ेलोशिप सेंटर खवा

एक जंगल था। उसमें अनेक प्रकार के जंगली जानवर रहते थे। उसमें खरगोश और चूहे के बीच घनिष्ठ मित्रता थी। चूहा जहां भी दाना चुगने जाता था कुछ दानें खरगोश के लिए जरूर ही लाता था। खरगोश जहां भी जाता उसके बिल की रखवाली की जिम्मेदारी चूहों को देकर जाता था। एक दिन चूहा भूखा था और खरगोश उसे कुछ भी लाकर नहीं दिया। उसी दिन से चूहा समझ गया कि खरगोश स्वार्थी है। उसी दिन से उसकी मित्रता में दरारें पड़ने लगी। कुछ समय बाद एक शिकारी के जाल में खरगोश फंस गया था। चूहे ने जब देखा तो उसे बहुत दुख हुआ लेकिन उसे पिछले दिन याद आ गए जब उसे भूखा सोना पड़ा था। खरगोश बार-बार जोर-जोर से उसे बचाने के लिए आवाज लगा रहा था। खरगोश को मन ही मन दुखी देखकर चूहे को उस पर तरस आ गया और तुरंत शिकारी के जाल को काटना आरंभ किया। खरगोश बाहर आकर अपने बिल में घुस गया। खरगोश ने बाहर आकर अपने प्रिय मित्र चूहे को धन्यवाद दिया।

सुमेर बैरवा, समुदाय कार्यकर्ता, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

धातु-अधातु

स्ट्रीम प्रोग्राम के तहत राजकीय विद्यालयों में विज्ञान व गणित में डेमो कार्य किया जाता है। विज्ञान पढ़ाने का उद्देश्य बच्चों में खोजी प्रवृत्ति का विकास करना व करके सीखना जिसमें बच्चे स्वयं से करके सीखते हैं व समझ बनाते हैं। मैं रोज की तरह आज भी राजकीय विद्यालय कटार में डेमो कार्य के लिए गया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक जिन्होंने अभी कार्य ग्रहण किया था। मैंने सबसे पहले उनसे मुलाकात की और अपने कार्य के बारे में बताया कि हम स्टीम प्रोग्राम में बच्चों के साथ विज्ञान व गणित में प्रेक्टिकली कार्य करते हैं ताकि बच्चे स्वयं से कार्य करके सीखें इसके बाद उन्होंने कहा कि आप बच्चों के साथ कार्य आरंभ करें मैं भी आपकी कक्षा देखना चाहूंगा। प्राधानाध्यापक व विज्ञान शिक्षक मेरे साथ क्लास में थे मुझे आज बच्चों के साथ धातु व अधातु टॉपिक पर समझ बनाने का

दिलराज मीना कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

कार्य करना था। मैंने अपना कार्य प्रारंभ किया। बच्चों से अपने आस-पास देखी जाने वाली वस्तुओं के बारे में पूछा व बच्चों ने जो वस्तुयें बताई उनकी एक लम्बी लिस्ट तैयार हो गई। बच्चे अपनी पिछली कक्षा के अनुभव व नए अनुभवों के साथ धातु व अधातु के आधार पर वस्तुओं के समूह बनाने लगे। मैं समझ पाया कि बच्चे सही से यह कार्य नहीं कर पा रहे थे। मैंने अनुभव किया कि बच्चों ने यह कार्य पढ़ा तो है लेकिन करके नहीं सीखा इसलिए वे इसका पता नहीं लगा पा रहे थे। शायद पढ़ा हुआ भूल रहे थे। अब मैंने बच्चों को धातुओं के गुण बतायें और उनके आधार पर वस्तुओं की लिस्ट बनाने के लिए कहा अब सभी बच्चे दो समूहों में बटकर धातुओं के गुणों के आधार पर करके देख रहे थे और पहचान कर समझ रहे थे लेकिन वस्तुओं में विद्युत चालकता को कैसे समझें ताकि बच्चों की समझ पुख्ता हो सके। इसके लिए मैंने चालकता को समझाने के लिए बच्चों से एक विद्युत परिपथ बनवाया। बच्चों ने इस कार्य को बड़ी रूचि के साथ करते हुए एक विद्युत परिपथ तैयार किया। (इस कार्य के

लिए मैंने बच्चों को सामग्री उपलब्ध करवाई जैसे सेल, एलईडी बल्ब, डोरी आदि) और सभी बच्चे वस्तुओं में विद्युत धारा का प्रवाह देखने लगे। मैं अपनी जगह पर बैठा हुआ यह सब देख रहा था किसी वस्तु में जैसे ही बल्ब जलता बच्चे खुशी से झूम उठते बच्चे क्या-क्या कल्पना कर रहे थे। कुछ बच्चे अपने हाथों में पहनने के कड़े को चेक करके देख रहे थे। लड़कियाँ अपने कानों की बालियाँ, नाक में पहनने का नथ, बटन, बैग की चेन, पैरों की पायजेब व न जाने कितनी ही वस्तुओं में बच्चों ने करके देखा। बच्चे इस कार्य को करके इतने खुश हो रहे थे जैसे आज सभी वस्तुओं में यह कार्य करके देखेंगे। बच्चे यही नहीं रूके और उन्होंने रोकना भी नहीं था। यह कार्य प्रधानाध्यापक के सामने हो रहा था। वे भी बच्चों को वस्तुओं के नाम सुझा रहे थे। बच्चों की कल्पना शक्ति को देख रहे थे और मैं बच्चों में जो रोचकता देख रहा था मैं भी काफी खुश था।

बच्चों का रोचकता के साथ सीखना भी हो रहा था। बच्चे कक्षा से बाहर चले गये और आफिस में जाकर वस्तुओं को चेक करने लगे। इतने में ही उन्हें लगा कि हम पानी में भी करके देखेंगे। उन्होंने गिलास में जल भरकर सर्किट के दोनों सिरे पानी में डाले और देखा कि बल्ब पानी में जल गया। अब बच्चे कहने लगे कि सर जल भी धातु है। मैंने कहा कि इसका आप ही पता करके बताओ कि जल धातु है या अधातु। सभी बच्चे इसके बारे में सोचने लगे और 5 मिनट बच्चों ने चर्चा की और लास्ट में बताया कि सर धातु नहीं है क्योंकि इसमें धातुओं के अन्य गुण नहीं है। जैसे यह ठोस नहीं, आघात-वर्धनीय नहीं है, तन्य नहीं है इसलिए यह धातु नहीं है। अब मुझे लगा कि बच्चे धातु और अधातु में अंतर को स्पष्ट रूप से समझ गये थे और हम (प्रधानाध्यापक) उनसे जो सवाल किये जा रहे थे उनमे भी अच्छे से जवाब दे पा रहे थे। इससे मैंने अनुभव किया कि बच्चे रोचकता के साथ अपनी कल्पना से भी ज्यादा सोच सकते हैं। यह देख कर प्रधानाध्यापक जी काफी खुश हुए और कार्य की सराहना की। बच्चों को जितेने मौके दिये जाएँ और बच्चों के साथ प्रेक्टिकली कार्य किया जाए तो बच्चे सीखते हैं जो उन्हें लम्बे समय तक याद रहता है व बच्चों में रटने की प्रवृत्ति कम होती है।

जगदीश कोली, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

रोहित मीना, कक्षा-5,
फेलोशिप सेंटर खाण्डोज

जोड़ - तोड़

समबाहु त्रिभुज

गोलु गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मेरा नाम प्रिया गुर्जर है। मैं कक्षा 8 में पढ़ती हूँ। एक दिन सर ने हमसे कहा कि आज मैं तुम्हें समबाहु त्रिभुज पढ़ाऊंगा। तो हमने सोचा समबाहु त्रिभुज क्या होता है। तो सर ने शब्द के अर्थ को स्पष्ट किया और कहा कि सम यानी समान, बाहु यानी भुजा, त्रि यानी तीन, मतलब वह तीन भुजा वाली बंद आकृति जिसकी तीनों भुजा समान होती हों, वह समबाहु त्रिभुज कहलाता है। इसके बाद उन्होंने एक टीएलएम लिया जिसमें बहुत सारे अलग-अलग प्रकार के त्रिभुज चिपका रखे थे। उन्हें हम सभी ने देखा और स्केल से उन सभी त्रिभुजों की भुजाओं को मापा और उनकी लम्बाई को पैंसिल से लिख दिया। सर ने पूछा, कि अब बताइए इनमें से समबाहु त्रिभुज कौन-कौन से हैं? हमने सर को उनमें से पहचान कर समबाहु त्रिभुज तुरंत बता दिए। यह देखकर सर मुस्कुराए और हमें उपसमूह में बांटकर सभी को कुछ तीलियाँ दी और बोले कि अब आपको इन तिलियों की मदद से त्रिभुज बनाने हैं। हमारे ग्रुप ने तुरंत त्रिभुज बनाने का काम शुरू कर दिया और आठ-दस त्रिभुज बना दिए। सर सभी गुरप में घूम-घूम कर देख रहे थे। शायद सभी गुरप का काम अच्छा चल रहा था और इस काम में मजा भी आ रहा था। अब सर ने कहा, कि आप सभी स्केल से इन बनाये गये त्रिभुजों में से सभी की भुजायें माप कर समबाहु त्रिभुजों को पहचान कर बताओ? हम सभी इस कार्य में जुट गए और सर्व प्रथम हमारे ग्रुप ने यह कार्य सही करके बताया। हमारे द्वारा पहचान किये गये समबाहु त्रिभुज सभी सही थे। इसके बाद हमने स्केल की मदद से नोट बुक में समबाहु त्रिभुज बनाने का अभ्यास कार्य किया। मैंने अपनी नोटबुक सर को दिखाई तो समबाहु त्रिभुज सही निकले। अब मैं समबाहु त्रिभुज के बारे में अच्छे से समझ चुकी थी कि समबाहु त्रिभुज, त्रिभुज का एक प्रकार है और इसमें तीन भुजायें होती हैं। जब तीन एक समान लम्बाई की भुजायें मिलकर एक बंद आकृति बनाती हैं तो हम उसे समबाहु त्रिभुज कहते हैं। त्रिभुज एक ऐसी आकृति होती है, जिसमें तीन रेखाए एक दूसरे से मिलकर बंद आकृति बनाती है और उस बंद आकृति में दो रेखाओं के मिलने से कोण का (निर्माण) बनता है। अलग-अलग तरह के त्रिभुज में अलग-अलग तरह का (एंगल) कोण बनता है। हम जानते है कि समबाहु त्रिभुज एक ऐसी आकृति है, जिसमें तीन रेखाओं की लम्बाई एक समान होती है और जब दो रेखाओं की लम्बाई एक समान हो जाए तो आधार की रेखा से मिलकर बनने वाले दोनों इंगल (कोने) एक समान होते हैं। इस तरह हम समझ सकते हैं कि एक समबाहु त्रिभुज में मौजूद तीनों कोण या एंगल एक समान होते हैं।

प्रिया गुर्जर, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

कलाकारी

काँच पर डिजाइन

दीलिप मीना, कक्षा-4, फ़ेलोशिप सेंटर खान्डोज

एक दिन हमारे तरुण जी सर फोन पर कुछ देख रहे थे तभी अचानक मोबाइल में एक काँच की डिजाइन आई जिसे हम सभी बच्चों ने देखा। उसमें एक व्यक्ति एक चोकोर पारदर्शी काँच और एक पौधे की पत्ती लेता है। उस पत्ती पर ब्रश से उसने पीले रंग से पेंट किया और उस पेंट की हुई पत्ती को उस पारदर्शी चौकोर काँच पर रखकर ट्रेस या छाप दिया। इसे बाद उस व्यक्ति ने उस काँच को थोड़ी देर धूप में सूखने के लिए रख दिया। कुछ ही देर बाद वह काँच सूख गया। उस व्यक्ति ने उस काँच पर चारों और स्केल की मदद से किनारों से लगभग एक से डेढ़ इंच तक बुश से काला रंग पेंट कर बाउंड्री बना दी और पुनः उसे सूखने के लिए धूप में रख दिया। थोड़ी देर सूखने के बाद वह काँच और उस पर बनी हुई पेंटिंग बहुत ही सुंदर दिख रही थी। हम सभी को कांच पर बनाई गई डिजाइन वाली विडियो बहुत अच्छी लगी। हमने उस विडियो को लाइक भी किया।

हम सभी ने तय किया कि कल हम कला के कालांश में इसी प्रकार की कांच पर पेंटिंग कार्य करेंगे। इसके लिए तरुण जी सर ने कहा, कि हमें इस कार्य के लिए कांच की जरूरत पड़ेगी तो कल सभी अपने आस-पास घर में कोई भी पुराना कांच हो जो काम में नहीं आ रहा है उसे लेकर आयेंगे। इस

कार्य में कांच से कटने का डर रहता है इसलिए आप सभी कांच को उठाते या पकड़ते समय सावधानी भी रखें ताकि किसी को कोई चोट रुझ नुकसान नहीं पहुँचे। दूसरे दिन हम सभी अलग-अलग आकार के कांच के टुकड़े अपने-अपने घरों से ढूंढ कर लेकर आए। वे सभी पारदर्शी थे। हम सभी को तरूण सर ने चार ग्रुप में बांट दिया और हमें एक-एक फैब्रिक कलर का पैकेट और आवश्यकतानुसार ब्रश दे दिये। सर्वप्रथम हमने उस कांचों को सावधानीपूर्वक धोकर सुखा दिया। तत्पश्चात अपने-अपने ग्रुप में बैठकर हमने विविध आकार की पत्तियाँ ली और उन पत्तियों पर अपनी-अपनी पसंद के रंगों से पेंट कर दिया और उनको कांच पर छाप या ट्रेस कर दिया। कुछ देर उन्हें सूखने के लिए रख दिया। थोड़ी देर बाद जब वे सूख गए तो हमने काले रंग से अलग-अलग प्रकार की सीधी, वलयाकार किनारों पर बाउंड्री बनाकर उन्हें सूखने के लिए रख दिया। सूखने के पश्चात हमारे द्वारा बनाई गई कांच की पेंटिंग बहुत ही अच्छी लग रही थी। फिर हमने कुछ बचे हुए कांचों पर विविध प्रकार की पेंटिंग बनाई। जिसमें मैंने अपने कांच पर मिकी माउस बनाया। किसी ने पेड़, मछली, बादल आदि भी बनाए और तो और हमने कागज को कैंची से काटकर अलग-अलग तरह की डिजाइन भी बनाई और इन डिजाइनों के छापे उन काचों पर लगाए। उन्हें कुछ देर सुखाकर अलग-अलग रंगों से पेंट किया और उनकी एक प्रदर्शनी भी की। जिसमें सभी स्कूल के बच्चों और शिक्षकों ने उनको देखा। उन्हें बहुत अच्छा लगा।

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

सुगना सैनी, कक्षा-7, राजकीय विद्यालय रामसिंहपुरा

बात लै चीत ले

मोर नाच रहा है

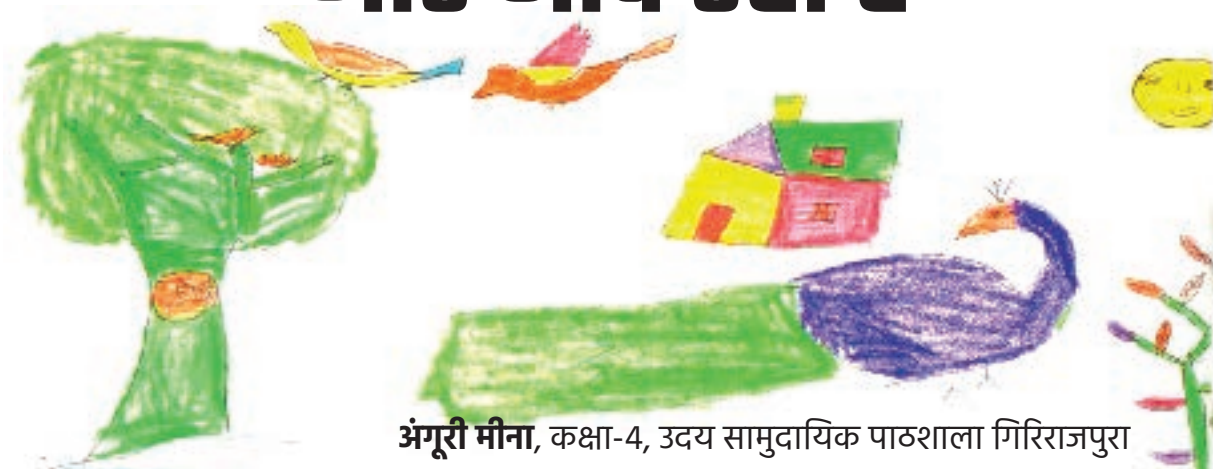

अंगूरी मीना, कक्षा-4, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

एक दिन जब मैं छत पर गई तो मैंने देखा कि एक मोर अपने पंख फैलाकर नाच रहा है। मैंने यह इतनी पास से पहली बार देखा था इसलिए मैं उसे देखती ही रही। तभी मम्मी छत पर आई। मैंने पूछा मम्मी यह मोर क्यों नाच रहा है? मम्मी ने कहा, तुम सोचो और बताओ? मैंने कहा, पास वाले दादाजी इनको रोजाना दाना डालते हैं। शायद इसलिए मोर दादाजी को थैंक्यू बोलने के लिए नाच रहे है। मम्मी ने कहा, हाँ मैं भी यही सोच रही हूँ।

प्रिया सोलंगी, कक्षा-3, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

अनाथ लड़की

रामपुरा गाँव में एक लड़की रहती थी। उसका नाम सोनाली था। सोनाली के एक भाई भी था। सोनाली के माता-पिता बचपन में ही गुजर गये थे। सोनाली की मामी अपने घर सोनाली और उसके भाई पिटू को लेकर जयपुर चली गई। उसकी मामी घर का सारा काम सोनाली से कराती थी और उसके भाई पिंटू को स्कूल भेजती थी। सोनाली की मामी सारा दिन टीवी देखती थी। सोनाली काम नहीं करती तो उसकी मामी उसको खाना तक नहीं देती थी। एक दिन पिंटू पढ़ने गया तो सोनाली का मन भी पढ़ने का हुआ। सोनाली ने अपनी मामी से पढ़ने के लिए कहा, वह बोली कि तुम पढ़ कर क्या करोगी? सोनाली बोली मै पिताजी का नाम रोशन करूंगी। उसकी मामी बोली, पता नहीं तुम कौन से घर का चूल्हा फूंकोगी। यह कहकर सोनाली की मामी ने पिंटू के पास कॉल किया कि पिंटू तुम पढ़ कर क्या करना चाहते हो? पिंटू बोला कि, मैं तो बड़ा होकर शादी करूंगा। सोनाली की मामी अब समझ गई और सोनाली को भी स्कूल में भर्ती करवा दिया। अब सोनाली पिंटू के साथ रोज स्कूल जाने लगी।

किस्मत बैरवा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

रामरतन मीना, कक्षा-5, फ़ेलोशिप सेंटर हिरामन की ढाणी श्यामपुरा

माथा पच्ची

1. ऐसी कौनसी चीज है जो पैदा होते ही बिना पंखो के उड़ जाती हैघ्
2. ऐसी कौनसी चीज है जो लाल होती है परन्तु हम उसे पकड़ नहीं सकतेघ्
3. ऐसी कौनसी चीज है जिसे खूब मारो पर वो मरती नहीं हैघ्
4. ऐसी कौनसी बुक है जो कभी छपी नहीं?
5. ऐसा शब्द बताओ जिसमें जानवर का नाम भी है और एक हथियार का नाम भी है?

अभिषेक गुर्जर, कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

हीहीही-ठीठीठी

1. आदमी (मच्छर से) - दिन में क्यों काट रहे हो?

मच्छर - ओवर टाईम कर रहा हूँ, साहब। माँ-बाप बीमार है, घर में जवान बहन है और लड़के वालों ने दहेज में एक लीटर खून मांगा है।

फतेह सिंह गुर्जर, कक्षा-6,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

लोकेन्द्र मीना
फेलोशिप सेंटर हिरामण की ढाणी

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

ऐसा देखा मैंने एक शहर

भालू बंदर घूमे हर पहर ...

नरेन्द्र नायक

कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार के द्वारा शुरु की गई कविता को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

मनीषा गुर्जर, उम्र-12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

एक जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। वे सारे जानवर एक साथ घुल-मिलकर रहते थे। इस बात से शेर बहुत चिंतित था। क्योंकि जब भी शेर शिकार करने के लिए जाता तो सारे जानवर मिलकर शेर को भगा देते थे। उस सभी जानवरों में फूट डालने के लिए शेर ने एक उपाय सोचा। ...

विजय गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा के द्वारा शुरु की गई कहानी को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

प्रतिज्ञा ढोली, फेलोशिप सेंटर राँवल

पहेलियों के ज़वाब -

1. धुँआ 2. आग 3. परछाई 4. फेसबुक 5. घोड़ा

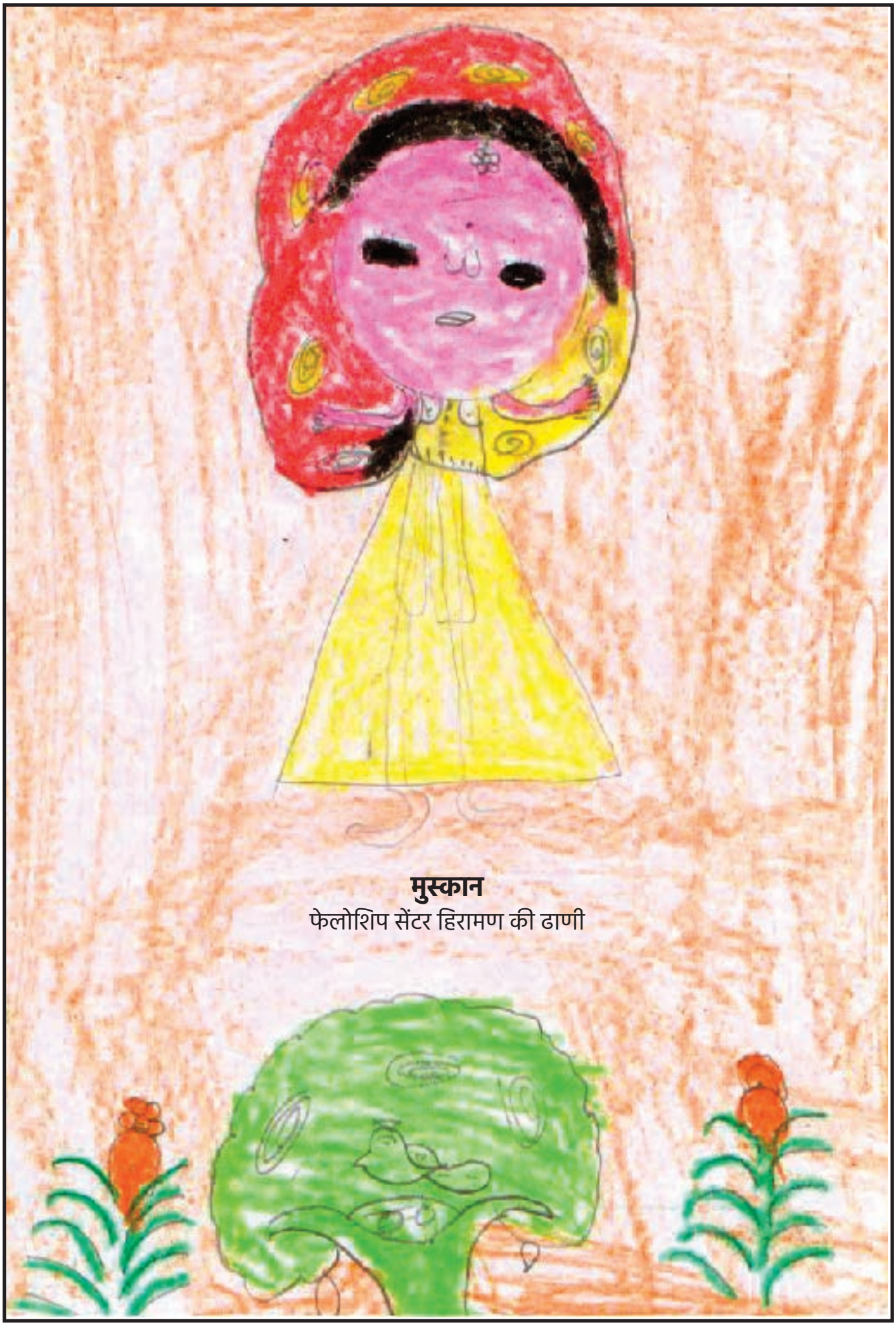

मुस्कान

फेलोशिप सेंटर हिरामण की ढाणी